थी। लेकिन गणिका वर्ग इसके लिए अनुकूल न था। अतः परिस्थिति जन्य प्रेरणा से उसे एक कुकृत्य करना पड़ा। वह यह था कि जब कालिदास ने उस श्लोक को पूरा किया तो कामिनी उसे विष पिलाकर मार देती है। क्योंकि कहीं कालिदास उसके स्वप्नपूर्ति के लिए बाधक न बन जाएँ। लेकिन जब वह जान जाती है कि उसने कालिदास जैसे महान कवि को मार डाला तो आत्महत्या कर लेती है। कामिनी के प्रेम के विषय में मीराकांत लिखती हैं- कामिनी का कुमारदास की अर्द्धांगिनी बनने का स्वप्न राजप्रसाद के वैभव का लोभ कहकर नहीं टाला जा सकता। इस किंवदंती के पीछे नारी हृदय की सहज, मर्यादित प्रेम आकांक्षा सक्रिय है। समाज नारी हृदय की तड़प और आकुलता को नहीं समझते बल्कि कामिनी की राजवैभव प्राप्ति की इच्छा को प्रतिपादित करता है। यह नारी कामनाओं का घोर अपमान है।

इस नाटक में एक और घटना समांतर रूप से चलती है। कालिदास और उसकी पत्नी विद्योत्तमा के संबंधों के माध्यम से स्त्री विमर्श का नया कोण उद्घाटित होता है। मूर्ख कालिदास के साथ विद्योत्तमा का विवाह पंडितों ने इसलिए निश्चित किया क्योंकि विद्योत्तमा केवल स्त्री नहीं बल्कि विदुषी थी। अनमेल विवाह से पति पत्नी के रिश्ते टूट जाते हैं। ज्ञान, विज्ञान, राजनीति आदि क्षेत्रों में स्त्री को दूर रखने की प्रवृत्ति हमेशा रही है। विद्योत्तमा अपनी स्थिति यों स्पष्ट करती है-- ..मुझसे छल किया गया...एक ग्रामीण सरल मूढ़ व्यक्ति से काशी नरेश की विदुषी कन्या का विवाह कराकर उसे उपहास का पात्र बनाया गया।... कभी प्रतीत होता है कि यह छल मुझसे नहीं एक स्त्री से किया गया है जिसका अपराध था उसका बुद्धिमती होना..उसका वैदुष्य। हम सब के सामने एक प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या नारी केवल बुद्धि है या केवल देह? एक स्त्री को उसकी पूर्णता में नहीं देखी जाती है। स्त्री के वैचारिक तत्व और बुद्धि तत्व ही उसे पूर्ण स्त्री बनाते हैं। इस तथ्य को उजागर करते हुए मीरा कांत इस नाटक में स्त्री अस्तित्व एवं महत्व को प्रमुखता देती हैं।

मीरा कांत का अगला नाटक है अंत हाजिर हो। इसमें समाज में छिपे हुए सत्य को बेबाकी से सामने लाने की हिम्मत करती है। वर्तमान परिस्थितियाँ स्त्रियों के लिए असुरक्षा का माहौल पैदा कर रही है। यह समाज अबोध बच्चियाँ, किशोरियाँ, स्त्रियों सबके लिए खतरा बन रहा है। संवेदनाशून्य पुरुष कामवासना से दिग्भ्रमित होता है। परिवार के भीतर भी हम सुरक्षित नहीं। परिवार में बलात्कार के मामले इक्कीसवीं सदी की खोज नहीं। वर्तमान सचेत समाज के कारण यह बात जनता के सम्मुख अधिक उजागर होने लगी है। यदि बचपन में ही कोई लड़की यौन हिंसा का शिकार हो जाती है तो मानसिक रूप से वह तितर बितर हो जाती है। नाटक में शिल्पा की छोटी बहन ऐसी मानसिक पीड़ा सहती रहती है। समाज में पिता-पुत्री, माँ -बेटे के रिश्ते अत्यंत पवित्र एवं सुरक्षित हैं। मगर वतर्मान बाजारवादी समाज के प्रभाव से इस पवित्रता में कालिमा छाने लगी है। नाटक में चित्रित पिता एक प्राध्यापक है। नाटक में जो पिता है वह अशिक्षित, गँवार नहीं बल्कि प्राध्यापक हैं। पत्नी को सदा कोसता है कि वह एक बेटा पैदा नहीं कर पाई। पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी पुत्रियों पर ही आसक्त होता है। उनका यौन शोषण करता है। नाटक में निरंतर छोटी लड़की ही यौन शोषण का शिकार बनती है। शिल्पा कहती है - सुना था लताएँ पेड़ से आश्रय पाती हैं। पेड़ अपना सत्व देकर उनका सहारा बनता है। पर ऐसी अभागी लताएँ भी तो होती है जिन्हें आश्रय के नाम पर पेड़ निगल जाते हैं। अंत में वह आत्महत्या कर लेती है। हमें यह सोचना चाहिए कि क्या आत्महत्या ही इन सबका समाधान है? स्त्रियों की समस्याएं पूरे समाज की समस्या है। नारी मुक्ति आंदोलन का प्रचार प्रसार सही अर्थों में करना चाहिए। मानवता से हीन ऐसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने की बड़ी आवश्यकता है। स्त्री विमर्श की अवधारणाओं में पारिवारिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर अधिक बल देना चाहिए।

उत्तर प्रश्न नामक नाटक समाज की एक संतुलित व्यवस्था की कामना करता है। यह ऐसी व्यवस्था है जहाँ स्त्री अकेली नहीं, समस्त मानव मूल्यों से युक्त पुरुष उनके साथ है। यह नाटक कश्मीर की पहली महिला शासक यशोमती की कहानी है। उसका पति युद्ध में कृष्ण के सुदर्शन चक्र से मारा गया। जब राज्याधिकार यशोमती को मिला तब वह गर्भवती थी। पुत्र होने के बाद मंत्रीगणों ने उस प्रतिभावान नारी को अधिकार से हटाना चाहा। यशोमती जागरूक, सक्षम और आत्मगौरव से मंडित नारी है। वह दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ती है और कहती है कि पुत्र का राज्याभिषेक अभी नहीं होगा और तब तक पद का त्याग नहीं करेगी जब तक पुत्र स्त्री शक्ति की अभिव्यक्ति का पक्षधर न बने। आरक्षण के लिए संघर्षरत नारी का चित्रण मीरा कांत नाटक के जरिए प्रस्तुत करती है। इसमें स्त्री संघर्ष को आगे ले जाने के लिए पुरुषों की मानसिकता में बदलाव लाने की बात पर जोर दिया है।

निष्कर्षतः मीरा कांत के स्त्री पात्र अपनी नियति को परिवर्तित करने के लिए संघर्षरत हैं। चरित्रों में जो तनाव उपस्थित होता है उसी से व्यक्ति में स्वातंत्र्य की भावना जागृत होती है। उत्तराधुनिकता से जन्मी परिस्थितियाँ नारी के लिए मुक्ति से अधिक बंधन बनने लगा। आज आवश्यकता है कि नारी के दर्द को महसूस करते हुए उसका उपचार किया जाए। नारी मुक्ति आंदोलन के प्रचार प्रसार को उसके सही अर्थों में करना चाहिए, न कि चुप्पी और मौन इसका समाधान है। परिवार के भीतर ही मानवता का पतन हो तो समाज की क्या स्थिति हो सकती है? स्त्री विमर्श की अवधारणाओं में पारिवारिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भी बल देना चाहिए। मानवीय मूल्य युक्त समाज की उन्नति ही हमारा लक्ष्य है। पीड़ा से तड़प तड़पकर स्त्री के अंतर्मन से उद्भूत तीव्र विकार स्त्री को पुरुष से भी सशक्त बनाता है। पुरुष के अहं, ईगो आदि स्त्री के इस मनोविकार में दब जाते हैं। मीरा कांत का लक्ष्य है - स्त्री की इस मानसिक शक्ति को उजागर करना। ■